is question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

No. of Question Paper : 8845

GC

ique Paper Code : 62051412

me of the Paper : हिन्दी भाषा और साहित्य

me of the Course : **B.A. (Programme) Hindi-B**

nester : IV

ration : 3 Hours

Maximum Marks : 75

<u>ों के लिए निर्देश</u>

इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

निबंध के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

कहानी की परिभाषा देते हुए उसके विकास को स्पष्ट कीजिए।

'बूढ़ी काकी' कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'उसने कहा था' कहानी की मूल-संवेदना पर प्रकाश डालिए।

'मेले का ऊंट' निबंध का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। (12)

00)

P.T.O.

अथवा

'सदाचार का ताबीज' निबंध भ्रष्ट व्यवस्था का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। स्पष्ट कीजिए।

4. 'अंधेर नगरी नाटक के कथानक की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'बिबिया नारी की पीड़ा व्यक्त करने वाली रचना है।' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

5. निम्नलिखित प्रसंगों की व्याख्या कीजिए-

(क) चार दिन तक पलक नहीं झाँपी। बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही। मुझे तो संगीन चढ़ाकर मार्च का हुकुम मिल जाए। तो सात जर्मनों को अकेला मारकर लौटूँ तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीन न हो। पाजी कहीं के, कलों के घोड़े - संगीन देखते ही मुँह फाड़ देते हैं और पैर पकड़ने लगते हैं। यों अंधेरे में तीस-तीस मन का एक गोला फेंकते हैं। उस दिन धावा किया था चार मील तक एक जर्मन नहीं छोड़ा था। पीछे जनरल साहब ने हट आने का कमान दिया, नहीं तो.....।

अथवा

पहली बार आपकी बुद्धि पर अफसोस हुआ था। भाई! आपकी दृष्टि गिद्ध की सी होना चाहिए, क्योंकि आप सम्पादक हैं। किन्तु आपकी दृष्टि

345

गिद्ध की सी होने पर भी उस भूखे गिद्ध की सी निकली जिसने ऊँचे आकाश में चढ़े-चढ़े भूमि पर एक गेहूँ का दाना पड़ा देखा पर उसके नीचे जो जाल बिछ रहा था वह उसे न समझा। यहाँ तक कि उस गेहूँ के दाने को चुगने से पहले जाल में फँस गया।

(ख) महाराज, भ्रष्टाचार और सदाचार मनुष्य की आत्मा में होता है; बाहर से नहीं होता। विधाता जब मनुष्य को बनाता है तब किसी आत्मा में ईमान की कल फिट कर देता है और किसी की आत्मा में बेईमानी की। इस कल में से ईमान या बेईमानी के स्वर निकलते हैं, जिन्हें 'आत्मा की पुकार' कहते हैं। आत्मा की पुकार के अनुसार ही आदमी काम करता है। प्रश्न यह है कि जिनकी आत्मा से बेईमानी के स्वर निकलते हैं, उहें दबाकर ईमान के स्वर कैसे निकाले जाएँ?

अथवा

अन्धेर नगरी अनबूझ राजा। टका सेर भाजी टका सेर खाजा।।
नीच ऊँच सब एकहि ऐसे। जैसे भँडुए पण्डित तैसे।।
कुल-मरजाद न मान बड़ाई। सबै एक से लोग-लुगाई।।
जात-पाँत पूछे नहिं कोई। हरि को भजै सो हरि का होई।

निम्नलिखित मे से किसी एक पर टिप्पणी लिखिए। (7)

(क) नाटक और एकांकी में अंतर

अथवा

(ख) शुक्ल पूर्व निबंध का विकास

अथवा

(ग) हिन्दी आलोचना